19/12/2010

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 125 वर्ष

प्रस्ताव

28 दिसम्बर, 2010 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपनी स्थापना के 125 वर्ष पूरे करेगी। कांग्रेस पार्टी दुनिया के सबसे पुराने लोकतांत्रिक आन्दोलनों में से एक है और यह महा अधिवेशन उसकी यात्रा का एक ऐतिहासिक दिन है। यह न केवल लाखों कांग्रेसजनों के लिए, बल्कि विश्वभर में रहने वाले उन लोगों के लिए भी एक प्रेरणात्मक घड़ी है जो मानव–सम्मान और स्वतंत्रता में तथा स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार व स्वतंत्र चुनाव की शक्ति में विश्वास रखते है। 125वीं वर्षगांठ का यह अवसर हमारे गौरवपूर्ण इतिहास को याद करने में अपनी उपलब्धियों पर खुशियां मनाने और उन चुनौतियों पर विचार तथा आत्ममंथन करने का है, जिनका मुकाबला अभी किया जाना है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की एक साधारण शुरूआत 72 व्यक्तियों को लेकर हुई थी, जो मुंबई में गोवालिया टैंक पर एकत्रित हुए थे और जिनकी एक साझा इच्छा भारत को साम्राज्यवादी बेड़ियों से मुक्त कराने की थी। यह महा अधिवेशन उन विभूतियों को सलाम करने का अवसर है जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव रखी थी।

कांग्रेस ने हमेशा भारत की आत्मा और इसकी अद्वितीय नैतिक सार्वभौमिकता का प्रतिनिधित्व किया है जिसने समृद्ध काल में हमारे लोगों को स्थिरता प्रदान की है और विपरीत समय में साहस और मजबूती प्रदान की है।

दक्षिण अफ्रीका से महात्मा गांधी जी के आने से और रंगभेद के खिलाफ उनके साहसपूर्ण संघर्ष ने भारत की जनता को ओतप्रोत कर दिया। उनके सत्याग्रह का दर्शन भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष का मंत्र बन गया। कांग्रेस पार्टी सचमुच यह महसूस करती है कि हमारे मार्गदर्शी सिद्वांत उनके द्वारा स्थापित मूल्यों पर आधारित हैं, जोकि न केवल भारत के अपितु समूचे विश्व के लोगों के लिए स्थाई रूप से संबंध रखते हैं। महात्मा गांधी जी ने करोड़ों लोगों के दिलों को अपनी सादगी के संदेश को उदाहरण, साहस, सहिष्णुता और मनुष्यत्व के माध्यम से देकर मंत्र मुग्ध कर दिया था। उनके मूल्यों और दर्शन से प्रेरित होकर कांग्रेस ने देश के कोने–कोने में इसे फैलाया और सभी लोगों को गले लगाया और जाति–पाति, वर्ग भेद–भाव अथवा भाषा के अंतर को दूर रखा और इस प्रकार, लोकतांत्रिक विश्व में इसे एक महान् जन आंदोलन का रूप दिया।

स्वतंत्रता की प्राप्ति के साथ ही अनेक पीड़ाजनक चुनौतियां भी हमें विरासत में मिली। हमारे राष्ट्र की

अखण्डता जो विभाजन से तहस–नहस हो गई थी, हिंसा से जकड़ गई थी, उसकी गंभीर रूप से परीक्षा थी। ऐसे समय में, जबकि हमारे अधिकांश लोग घोर अज्ञानता, भूख और गरीबी से त्रस्त थे, लोकतंत्र को गले लगाना एक ऐतिहासिक बात थी और हमारे नेताओं ने इस लोकतंत्र को फलीभूत किया। लोकतंत्र हमारी साझा विरासत और हमारे राष्ट्र की अमिट शक्ति है और यह हमारा सामूहिक दायित्व है कि हम इसका पोषण करें और अपने धर्म–निरपेक्ष लोकतंत्र को मजबूत बनाएं। यह महा अधिवेशन धर्म–निरपेक्ष लोकतंत्र की महान परंपराओं का पोषण करने और उसे सुदृढ़ बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत की आजादी के शुरू के दिनों में बापू को हिंसक और साम्प्रदायिक शक्तियों ने हमसे छीन लिया। – और दुर्भाग्यवश ये वही शक्तियां थीं जिनके खिलाफ महात्मा गांधी खड़े थे। यह भारत का सौभाग्य था कि स्वतंत्रता आन्दोलन के महान अनुभवी नेताओं, विशेषकर पंडित नेहरू, मौलाना आजाद, सरदार पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, गोविंद वल्लभ पंत, बाबू जगजीवन राम जैसे नेताओं ने शोक और दर्द भरे क्षणों में हमें शक्ति प्रदान की थी।

पंडित नेहरू जी के अविस्मरणीय योगदान को हम बड़े सम्मान से याद करते हैं, जिन्हें हमारे संस्थानों के निर्माता के एक दूरद्रष्टा के रूप में याद किया जाता है। वे हमारी नियोजित अर्थव्यवस्था के विनिर्माता थे और उन्होंने भारत के औद्योगिकीकरण की नींव रखी और सार्वजनिक क्षेत्र की मज़बूती के साथ हमारी अर्थव्यवस्था को उच्च शिखर पर ले गए। उन्होंने हमारे अंदर वैज्ञानिक कार्यभावना को जन्म दिया और उत्कृष्ट संस्थानों का निर्माण किया जिन्होंने कि आज हमें मजबूती प्रदान की है। वे सार्वभौमिक राजनीतिज्ञ थे और उनके वैश्विक दृष्टिकोण ने उनके समय के विश्व नेताओं में सम्मान अर्जित किया। वे निर्गुट आंदोलन के प्रमुख निर्माता थे जिसने कि वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था बनाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने पंडित नेहरू जी की विरासत को जारी रखा और उन्होंने आदर्शवाद को एक मजबूत व्यवहारिकता से जोड़ा, जिसके फलस्वरूप वे राष्ट्र के हित में कड़े निर्णय ले सकीं। दिल से वे समाजवादी थीं, उनमें प्रिवि–पर्सो को समाप्त करने और बैंकों के राष्ट्रीयकरण जैसे बड़े निर्णय लेने का साहस था। वे कमजोर, दबे–कुचलों, दलितों, आदिवासियों और महिलाओं के पक्ष के लिए हमेशा खड़ी रहीं। गरीबो के प्रति उनकी चिन्ता गरीबी हटाने के लिए दिये गये उनके '' गरीबी हटाओं '' के नारे में परिलक्षित होती थी। उन्होंने हरित क्रांति लाकर भारत की आत्म–निर्भरता को सुनिश्चित किया और उच्च टेक्नोलॉजी के विकास पर अत्यधिक बल दिया। राजीव गांधी जी ने प्रधानमंत्री के रूप में एक त्रासदी से भरे दौर में कार्यभार संभाला और भारत को इक्कीसवीं शताब्दी के लिए तैयार होने का एक दृष्टिकोण प्रदान किया। वे सत्ता के विकेन्द्रीकरण और ग्रामीण संस्थानों को मजबूत करने के संबंध में एक पक्का इरादा रखते थे और इसी दृष्टिकोण से उन्होंने स्थानीय स्वः शासन और महिला सशक्तिकरण के लिए ऐतिहासिक विधान पेश किए।

उनका दृष्टिकोण उनके विधायी ऐजेंडे में परिलक्षित होता था जिसके चलते महिलाओं के लिए पंचायतों और नगर पालिकाओं में एक–तिहाई सीटें आरक्षित हुईं। वे युवा शक्ति को परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक मानते थे और उन्होने युवाओं को 18 वर्ष की उम्र में वोट देने का अधिकार दिलाया।

तत्पश्चात्, भारत ने सिद्धान्त विहीन गठजोड़ और विभाजनकारी नीति वाले राजनैतिक दलों का ऐसा दौर देखा जिनका की बंटवारे का एजेंडा रहा और जिसने मिलकर राष्ट्रीय राजनैतिक प्रवाह को प्रभावित करने का काम किया। कांग्रेस ने अपने परंपरागत स्थानों में जन समर्थन का आधार खो दिया था कार्यकर्ताओं का मनोबल गिर रहा था और वे दिशा की तलाश में थे। हमारे विरोधियों ने यहाँ तक अनुमान लगाना शुरू कर दिया था कि कांग्रेस खत्म हो जाएगी, जबकि भारत को उस समय कांग्रेस की सबसे ज्यादा ज़रूरत थी।

इस कठिनाई की घड़ी में श्रीमती सोनिया गांधी जी पार्टी की अध्यक्षा चुनीं गई। उन्होंने कांग्रेस के पुनः निर्माण और इसमें फिर से जान डालने की चुनौती को स्वीकार किया और साम्प्रदायिक शक्तियों द्वारा सिर उठाने का मुकाबला करने के लिए इसे तैयार किया। उनकी अगुवाई में पार्टी में ऊपर से नीचे तक सभी में उत्साह का संचार हुआ और लोगों का फिर से विश्वास हासिल करने के लिए इसे तैयार किया।

कांग्रेस की विचारधारा में भारत के लोगों ने अपना विश्वास पुनः दर्शाया और लगातार दो बार, कांग्रेस नेतृत्व वाले प्रगतिशील धर्मनिरपेक्ष गठबंधन को साम्प्रदायिक शक्तियों को रोकने के लिए जनादेश दिया। 2004 में हमने लोगों से ये वादा किया था कि हम आम आदमी के विश्वास की रक्षा करेंगे जिसकी झलक इस अवधि के दौरान की नीतियों और विधानों में दिखाई देती है। हमारे विकास के क्रम में सबको सम्मिलित करते हुए हमारा सामाजिक एजेंडा रहा है जिसने कि ग्रामीण क्षेत्र में एक मौन परिवर्तन को सुनिश्चित किया है।

भारत के युवाओं में भविष्य की आशाओं और उम्मीदों की झलक मिलती है और यह बात महत्वपूर्ण है कि युवा पुरूषों और महिलाओं को कांग्रेस की विचारधारा को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए जोकि आज भारत के विचार का एक अंग बन गया है। इससे हमारी इस महान् पार्टी में पुनः जान डालने और फिर से उसे सशक्त बनाने में मदद मिलेगी और इससे सदैव अपनी गौरवशाली परम्परा को कायम रखने में सहायता मिलेगी।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी मुंबई में कांग्रेस शताब्दी समारोह के अवसर पर श्री राजीव गांधी के संदेश को याद करती है जब उन्होने हमें इस संगठन को अधिक मज़बूत बनाने का आह्वान किया था क्योंकि किसी भी दूसरी पार्टी के पास देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने की क्षमता नहीं है। हालांकि उन्होने हमें उन सत्ता के बिचौलियों और स्वार्थी तत्वों से सावधान किया जो पार्टी को अस्थिर कर सकते हैं। उनकी विवेकपूर्ण सलाह हमें प्रेरित करती है कि हम एक जन–आन्दोलन पैदा करें जो इस पार्टी को भारत के लोगों से पुनः जोडे और सही मायनो में उनका सशक्तिकरण करें।

हमें विश्वास है कि भारत निर्माण का कार्य अभी भी अपूर्ण मिशन है। हमारे संस्थापकों का सपना तभी पूर्ण होगा जब विकास के फल गरीब से गरीब को पहुंचेंगे, जब देश से अज्ञानता का अंधेरा दूर होगा, जब सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व एक जीवन की राह बन जाएगा, जब समस्त नागरिक प्रगति में बराबर के भागीदार होंगे।

वर्ष भर चले हमारे स्मरणोत्सव के अन्तिम क्षणों में हमें राष्ट्रपिता के प्रेरणादायक शब्दों की याद आ जाती है :–

"मैं ऐसे भारत के लिए कार्य करूंगा जिसमें सबसे गरीब व्यक्ति यह महसूस करेगा कि यह मेरा देश है, जिसके निर्माण में उसकी प्रभावी आवाज है, एक ऐसा भारत होगा जिसमें लोगों की कोई भी उच्च श्रेणी अथवा निम्न श्रेणी नहीं होगी, एक ऐसा भारत होगा जिसमें सभी समुदाय पूर्ण सामंजस्य के साथ रहेंगे.... महिलाएं पुरूषों की तरह समान अधिकारों का उपयोग करेंगी। हम शेष विश्व के साथ शांति से रहेंगे। इस प्रकार का भारत मेरे सपनों में है।"

यह महा अधिवेशन महात्मा गांधी के सपनों के अनुरूप भारत के निर्माण के प्रति पुनः समर्पित है।

****